# अरे द्वारपालों कन्हैया से कह दो .....

देखो– देखो ये गरीबी ये ग़रीबी का हाल
कृष्ण के दर पे विश्वास लेके आया हूँ
मेरे बचपन का यार है मेरा श्याम
यही सोचकर मैं आस करके आया हूँ

अरे द्वारपालों कन्हैया से कह दो, कि दर पे सुदामा ग़रीब आ गया है।
भटकते–भटकते न जाने कहाँ से, तुम्हारे महल के करीब आ गया है।।

न सर पे है पगड़ी न तन पे है जामा
बता दो कन्हैया को नाम है सुदामा
तुम इक बार मोहन से जाकर के कह दो 2
कि मिलने सखा बदनसीब आ गया है ।

सुनते ही दौडे. चले आए मोहन,
लगाया गले से सुदामा को मोहन
हुआ रूक्मिणी को बहुत ही अचंभा 2
ये मेहमान कैसा अजीब आ गया है ।

बराबर में अपने सुदामा को बैठाए,
चरण आँसुओं से श्याम ने धुलाए
न घबराओ प्यारे जरा तुम सुदामा 2
खुशी का समां तेरे करीब आ गया है।

लगे फिर सुदामा, पुटलियां छिपाने,
मगर छीनकर लगे, कृष्ण जी खाने,
ये सौगात तेरी, भाभी ने दी है 2
इसे लेके आज यें, गरीब आ गया है।

रहे द्वारका में, कुछ दिन सुदामा,
विदाई करी तो, बोले यूं काना,
नहीं घबरावो प्यारे, जरा तुम सुदामा 2
खुशी का जमाना करीब आ गया है।

अरे द्वारपालों कन्हैया से कह दो.....